I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

*Research Article*

# अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र (घरेलू श्रमिक) में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन: एक समीक्षात्मक अध्ययन

**Vijay Prakash Meena [1*], Dr. Hemlata Mahawar [2]**
[1] Research Scholar, Department of Sociology, Faculty of Social Science, University College of Social Sciences and Humanities, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan
[2] Associate Professor, Department of Sociology, Maharana Pratap Government PG College, Chittorgarh, Affiliated to Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan

**Corresponding Author:** * Vijay Prakash Meena
**DOI:** https://doi.org/10.5281/zenodo.22334422

## सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र अजमेर जिले के असंगठित क्षेत्र में घरेलू कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में हो रहे परिवर्तनों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारतीय समाज में घरेलू कार्य महिलाओं के लिए रोजगार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, विशेषकर उन महिलाओं के लिए जिनकी शैक्षिक योग्यता सीमित है और जो आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से संबंधित हैं। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य घरेलू कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, कार्य की प्रकृति तथा रोजगार के कारण उनके जीवन में आए सामाजिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि घरेलू कार्य महिलाओं को आय अर्जित करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है। परिवार की आय में योगदान देने के कारण महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी, आत्मविश्वास तथा सामाजिक पहचान में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है। घर से बाहर कार्य करने के कारण उनके सामाजिक संपर्कों एवं जागरूकता का भी विस्तार होता है। हालाँकि घरेलू कार्यरत महिलाओं के समक्ष कम वेतन, रोजगार की असुरक्षा, लंबे कार्य घंटे, दोहरा कार्यभार, सामाजिक भेदभाव तथा सामाजिक सुरक्षा के अभाव जैसी अनेक चुनौतियाँ मौजूद हैं। असंगठित क्षेत्र की प्रकृति के कारण अधिकांश महिलाओं को नियमित रोजगार, लिखित अनुबंध तथा श्रम संबंधी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं। अध्ययन निष्कर्ष रूप में यह दर्शाता है कि घरेलू रोजगार महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम है, किंतु वास्तविक सशक्तिकरण के लिए उचित पारिश्रमिक, सुरक्षित कार्य वातावरण, सामाजिक सुरक्षा, कौशल विकास तथा अधिकारों के प्रति जागरूकता आवश्यक है। घरेलू श्रमिक महिलाओं को सम्मानजनक श्रमिक के रूप में स्वीकार करना उनके सामाजिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा।

**Manuscript Information**

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-05-2026
- **Accepted:** 26-06-2026
- **Published:** 30-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1120-1129
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

**How to Cite this Article**

Meena V P, Mahawar H. अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र (घरेलू श्रमिक) में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन: एक समीक्षात्मक अध्ययन, Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1120-1129.

**Access this Article Online**

www.multiarticlesjournal.com

**मूल शब्द:** असंगठित क्षेत्र; घरेलू श्रमिक महिलाएँ; सामाजिक स्थिति; महिला सशक्तिकरण; आर्थिक स्वतंत्रता; अजमेर जिला; सामाजिक परिवर्तन।


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

## 1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की कार्य-भागीदारी सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण संकेतक रही है। महिलाओं ने परंपरागत रूप से घरेलू कार्यों, कृषि तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, किंतु आधुनिक समय में उनकी भूमिका घर की सीमाओं से बाहर निकलकर विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों तक विस्तृत हुई है। विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी निरंतर महत्वपूर्ण बनी हुई है। घरेलू श्रम असंगठित क्षेत्र का एक प्रमुख हिस्सा है, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएँ घरेलू सहायिका, सफाईकर्मी, खाना बनाने वाली, बच्चों एवं वृद्धों की देखभाल करने वाली तथा अन्य घरेलू सेवाओं के रूप में कार्यरत हैं। यह कार्य महिलाओं को आय का एक साधन उपलब्ध कराता है, साथ ही उनकी सामाजिक स्थिति, पारिवारिक भूमिका एवं आत्मनिर्भरता को भी प्रभावित करता है (रघुराम, 2001)। भारत में घरेलू श्रमिकों का कार्य लंबे समय तक औपचारिक श्रम व्यवस्था के दायरे से बाहर रहा है। इनके कार्य की प्रकृति अनौपचारिक होने के कारण नियमित वेतन, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, अवकाश तथा अन्य श्रम अधिकारों का अभाव देखने को मिलता है। घरेलू कार्य को प्रायः महिलाओं के पारंपरिक दायित्व के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण इसके आर्थिक एवं सामाजिक महत्व को पर्याप्त मान्यता नहीं मिल पाती। विशेष रूप से निम्न आय वर्ग की महिलाएँ आर्थिक आवश्यकताओं के कारण घरेलू कार्य को रोजगार के रूप में अपनाती हैं (भसीन, 2004)।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति केवल उनकी आर्थिक आय से निर्धारित नहीं होती, बल्कि शिक्षा, निर्णय लेने की क्षमता, परिवार में सम्मान, सामाजिक सहभागिता, आत्मविश्वास तथा संसाधनों पर नियंत्रण जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है। जब महिलाएँ आय अर्जित करने लगती हैं, तो उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक भूमिका में परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं। आर्थिक योगदान के कारण परिवार के निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ सकती है तथा उनमें आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान की भावना विकसित हो सकती है। दूसरी ओर, कार्य और घरेलू दायित्वों के दोहरे बोझ के कारण अनेक महिलाएँ सामाजिक एवं मानसिक चुनौतियों का भी सामना करती हैं (कबीर, 1999)। अजमेर जिला राजस्थान का एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्र है। यहाँ ग्रामीण तथा शहरी दोनों प्रकार की आबादी निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार के अवसर, कम शिक्षा, आर्थिक असमानता तथा पारिवारिक परिस्थितियाँ अनेक महिलाओं को रोजगार की तलाश के लिए असंगठित क्षेत्र की ओर प्रेरित करती हैं। घरेलू श्रम महिलाओं के लिए अपेक्षाकृत आसानी से उपलब्ध रोजगार का माध्यम बनता है। विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की महिलाएँ परिवार की आय में सहयोग करने के उद्देश्य से घरेलू कार्यों में संलग्न होती हैं।

घरेलू श्रमिक महिलाओं के कार्य करने से उनके जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन दिखाई दे सकते हैं। आय अर्जित करने के कारण वे परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में योगदान देती हैं। इससे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन तथा अन्य आवश्यकताओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। कुछ परिस्थितियों में महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता और पारिवारिक सम्मान में वृद्धि होती है। साथ ही, घर से बाहर कार्य करने के कारण उनके सामाजिक संपर्कों और अनुभवों का विस्तार भी होता है। इस प्रकार रोजगार महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है (सेन, 1999)। हालाँकि घरेलू श्रमिक महिलाओं की स्थिति पूर्णतः सकारात्मक नहीं है। उन्हें कम वेतन, अनियमित रोजगार, लंबे कार्य घंटे, सामाजिक असमानता, कार्यस्थल पर असुरक्षा तथा सामाजिक सुरक्षा के अभाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई महिलाओं को आर्थिक योगदान देने के बावजूद परिवार और समाज में समान स्तर की मान्यता प्राप्त नहीं होती। अतः यह आवश्यक है कि घरेलू कार्य में संलग्न महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का व्यापक अध्ययन किया जाए (कुमार, 2010)।

## 2. अध्ययन की समस्या एवं उद्देश्य

### 2.1 अध्ययन की समस्या

भारत में महिलाओं की कार्य-भागीदारी सामाजिक एवं आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, किंतु असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की स्थिति आज भी अनेक चुनौतियों से प्रभावित है। घरेलू श्रमिक के रूप में कार्य करने वाली महिलाएँ परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं, फिर भी उनके कार्य को अक्सर औपचारिक रोजगार के समान सामाजिक एवं आर्थिक मान्यता प्राप्त नहीं होती। कम वेतन, अनियमित रोजगार, निश्चित कार्य समय का अभाव, सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं की कमी तथा कार्यस्थल पर असमान व्यवहार जैसी समस्याएँ उनके जीवन को प्रभावित करती हैं। अजमेर जिले में घरेलू कार्यरत महिलाओं की संख्या उल्लेखनीय है, विशेषकर आर्थिक रूप से कमजोर एवं ग्रामीण पृष्ठभूमि की महिलाओं की, जो पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस क्षेत्र में कार्य करती हैं। रोजगार के माध्यम से इन महिलाओं की आय, आत्मनिर्भरता, पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता, सामाजिक संपर्क एवं आत्मसम्मान में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है, परंतु यह परिवर्तन सभी महिलाओं में समान रूप से दिखाई नहीं देता। इसलिए प्रमुख अध्ययन समस्या यह है कि असंगठित क्षेत्र में घरेलू श्रमिक के रूप में कार्य करने से अजमेर जिले की महिलाओं की सामाजिक स्थिति में किस प्रकार और किस सीमा तक परिवर्तन आया है तथा उनके सामाजिक जीवन को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं।

### 2.2 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य अजमेर जिले के असंगठित क्षेत्र में घरेलू श्रमिक के रूप में कार्यरत महिलाओं की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का समीक्षात्मक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत घरेलू कार्यरत महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन किया जाएगा तथा यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि रोजगार से प्राप्त आय ने उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता को किस प्रकार प्रभावित किया है। अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता, परिवार एवं समाज में उनकी स्थिति, आत्मसम्मान तथा सामाजिक सहभागिता में हुए परिवर्तनों का विश्लेषण करना भी है। साथ ही घरेलू श्रमिक महिलाओं के समक्ष उपस्थित प्रमुख समस्याओं, जैसे कम वेतन, रोजगार की असुरक्षा, कार्य के लंबे घंटे, सामाजिक सुरक्षा के अभाव तथा कार्यस्थल संबंधी चुनौतियों का अध्ययन किया जाएगा। अंततः इस अध्ययन के माध्यम से घरेलू श्रमिक महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करने तथा उनके आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिए उपयोगी उपायों की पहचान करने का प्रयास किया जाएगा।

## 3. अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र एवं घरेलू श्रमिक महिलाओं की स्थिति

### 3.1 अजमेर जिले की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

अजमेर जिला राजस्थान राज्य का एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्षेत्र है। जिले की अर्थव्यवस्था में कृषि, व्यापार, पर्यटन, लघु व्यवसाय तथा विभिन्न प्रकार की सेवाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में पर्याप्त अंतर देखने को मिलता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक परिवार आज भी सीमित आय, कम रोजगार के अवसर तथा आर्थिक असुरक्षा जैसी समस्याओं का सामना करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए महिलाओं की कार्य-भागीदारी का महत्व बढ़ जाता है (शर्मा, 2015)। अजमेर जिले में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक सहभागिता में समय के साथ परिवर्तन देखा गया है। इसके बावजूद आर्थिक रूप से कमजोर तथा निम्न आय वर्ग की अनेक महिलाएँ औपचारिक क्षेत्र में रोजगार प्राप्त नहीं कर पाती हैं। सीमित शैक्षणिक योग्यता, तकनीकी कौशल की कमी तथा पारिवारिक दायित्वों के कारण वे असंगठित क्षेत्र में रोजगार की तलाश करती हैं। घरेलू कार्य इस वर्ग की महिलाओं के लिए आय अर्जित करने का एक प्रमुख माध्यम बनकर उभरा है (सिंह, 2017)।

### 3.2 अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र की प्रकृति

असंगठित क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक व्यापक एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों को सामान्यतः नियमित रोजगार, निश्चित वेतन, सामाजिक सुरक्षा तथा अन्य औपचारिक श्रम सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती हैं। अजमेर जिले में भी बड़ी संख्या में महिलाएँ घरेलू कार्य, निर्माण कार्य, कृषि मजदूरी, छोटे व्यापार तथा अन्य सेवा कार्यों में संलग्न हैं। इनमें घरेलू श्रमिक महिलाओं की संख्या विशेष रूप से महत्वपूर्ण है (राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 2021)। असंगठित क्षेत्र में रोजगार की उपलब्धता अपेक्षाकृत सरल होने के कारण कम शिक्षित एवं आर्थिक रूप से कमजोर महिलाएँ इस क्षेत्र की ओर आकर्षित होती हैं। घरेलू कार्य के लिए विशेष तकनीकी योग्यता की आवश्यकता कम होने के कारण महिलाओं को रोजगार प्राप्त करने में सुविधा होती है। फिर भी यह रोजगार प्रायः अनियमित, असुरक्षित तथा कम आय वाला होता है। अधिकांश घरेलू श्रमिक महिलाओं को कार्य के लिए किसी औपचारिक नियुक्ति पत्र या कानूनी सुरक्षा की सुविधा प्राप्त नहीं होती है (कुमार, 2018)।

### 3.3 घरेलू कार्य में महिलाओं की भागीदारी

अजमेर जिले में घरेलू कार्य में महिलाओं की भागीदारी मुख्यतः आर्थिक आवश्यकता से जुड़ी हुई है। निम्न आय वर्ग के परिवारों की महिलाएँ परिवार की आय बढ़ाने, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य व्यय तथा दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए घरेलू कार्य करती हैं। घरेलू श्रमिक महिलाओं के कार्यों में घर की सफाई, बर्तन धोना, कपड़े धोना, भोजन बनाना, बच्चों की देखभाल तथा वृद्ध व्यक्तियों की सहायता जैसे कार्य शामिल होते हैं (भसीन, 2004)। महिलाओं की घरेलू कार्य में भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि यह कार्य प्रायः स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होता है। महिलाएँ अपने निवास स्थान के आसपास के क्षेत्रों में कार्य कर सकती हैं, जिससे वे घरेलू एवं पारिवारिक दायित्वों के साथ रोजगार को संतुलित करने का प्रयास करती हैं। हालांकि इस दोहरी जिम्मेदारी के कारण उनके कार्यभार में वृद्धि भी होती है। घर के बाहर रोजगार करने के बाद भी अधिकांश महिलाओं से घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी निभाने की अपेक्षा की जाती है (कबीर, 1999)।

### 3.4 घरेलू श्रमिक महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति

घरेलू श्रमिक महिलाओं की आर्थिक स्थिति सामान्यतः सीमित आय एवं अनिश्चित रोजगार से प्रभावित होती है। अनेक महिलाएँ एक से अधिक घरों में कार्य करती हैं ताकि पर्याप्त आय अर्जित की जा सके। उनके कार्य के घंटे, वेतन तथा कार्य की प्रकृति अलग-अलग परिवारों और परिस्थितियों के अनुसार निर्धारित होते हैं। रोजगार की अस्थिरता के कारण उनकी आर्थिक सुरक्षा प्रभावित होती है (सेन, 1999)। सामाजिक स्तर पर भी इन महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। घरेलू कार्य को प्रायः कम प्रतिष्ठित कार्य माना जाता है, जिसके कारण महिलाओं को सामाजिक सम्मान एवं उचित मान्यता प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इसके बावजूद रोजगार से प्राप्त आय महिलाओं में आत्मनिर्भरता की भावना विकसित करती है और कुछ मामलों में परिवार के निर्णयों में उनकी भागीदारी को बढ़ाती है (रघुराम, 2001)।

### 3.5 महिलाओं की सामाजिक स्थिति में उभरता परिवर्तन

अजमेर जिले में घरेलू श्रमिक महिलाओं की कार्य-भागीदारी के कारण उनकी सामाजिक स्थिति में धीरे-धीरे परिवर्तन देखा जा सकता है। आर्थिक योगदान के माध्यम से महिलाएँ परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इससे उनके आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि की संभावना उत्पन्न होती है। बच्चों की शिक्षा, घरेलू खर्च तथा अन्य पारिवारिक निर्णयों में उनकी भागीदारी भी बढ़ सकती है (शर्मा, 2015)। फिर भी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया सभी महिलाओं के लिए समान नहीं होती। आर्थिक योगदान के बावजूद अनेक महिलाओं को पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं, लैंगिक असमानता तथा पारिवारिक नियंत्रण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए घरेलू श्रमिक महिलाओं की स्थिति को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक सम्मान, निर्णय क्षमता, स्वतंत्रता और जीवन की गुणवत्ता के व्यापक संदर्भ में समझना आवश्यक है। इस प्रकार अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र घरेलू श्रमिक महिलाओं के लिए रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह रोजगार जहाँ एक ओर आर्थिक सहयोग एवं आत्मनिर्भरता का अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर रोजगार असुरक्षा और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। अतः घरेलू श्रमिक महिलाओं की स्थिति का अध्ययन सामाजिक परिवर्तन एवं महिला सशक्तिकरण को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

## 4. कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल

### 4.1 कार्यरत महिलाओं की आयु संरचना

अजमेर जिले के असंगठित क्षेत्र में घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं की आयु संरचना विविध प्रकार की होती है। इस क्षेत्र में युवा, मध्यम आयु तथा अपेक्षाकृत अधिक आयु की महिलाएँ कार्यरत पाई जाती हैं। सामान्यतः परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं, बच्चों की जिम्मेदारी तथा घरेलू परिस्थितियों के कारण महिलाएँ विभिन्न आयु स्तरों पर रोजगार से जुड़ती हैं। मध्यम आयु वर्ग की महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक देखी जा सकती है, क्योंकि इस आयु में परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती हैं (शर्मा, 2015)। आयु का महिलाओं की कार्य-क्षमता, अनुभव तथा रोजगार की प्रकृति पर भी प्रभाव पड़ता है। युवा महिलाएँ अपेक्षाकृत अधिक कार्य करने में सक्षम होती हैं, जबकि अधिक आयु की महिलाएँ प्रायः सीमित संख्या में घरों में कार्य करती हैं। घरेलू श्रम की प्रकृति शारीरिक होने के कारण आयु बढ़ने के साथ कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है (कुमार, 2018)।

### 4.2 शैक्षिक स्थिति

घरेलू कार्य में संलग्न महिलाओं की शैक्षिक स्थिति उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार है। अनेक महिलाओं की शिक्षा सीमित होती है तथा कुछ महिलाएँ प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्तर तक ही शिक्षा प्राप्त कर पाती हैं। आर्थिक कठिनाइयाँ, पारिवारिक परिस्थितियाँ तथा प्रारंभिक अवस्था में विवाह जैसी परिस्थितियाँ महिलाओं की शिक्षा को प्रभावित कर सकती हैं (कबीर, 1999)। कम शैक्षिक योग्यता के कारण महिलाओं के लिए औपचारिक क्षेत्र में रोजगार प्राप्त करना कठिन हो जाता है। फलस्वरूप वे घरेलू कार्य जैसे असंगठित रोजगारों की ओर अग्रसर होती हैं। शिक्षा का स्तर महिलाओं की जागरूकता, निर्णय लेने की क्षमता तथा सामाजिक सहभागिता को भी प्रभावित करता है। इसलिए घरेलू श्रमिक महिलाओं की सामाजिक स्थिति के अध्ययन में शिक्षा को एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है (भसीन, 2004)।

### 4.3 वैवाहिक स्थिति

कार्यरत घरेलू महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर उनकी वैवाहिक स्थिति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। विवाहित, अविवाहित, विधवा तथा परित्यक्ता महिलाएँ विभिन्न परिस्थितियों में घरेलू कार्य से जुड़ी हो सकती हैं। विवाहित महिलाएँ प्रायः परिवार की आय में सहयोग करने के लिए कार्य करती हैं, जबकि विधवा अथवा परित्यक्ता महिलाओं के लिए रोजगार आर्थिक आत्मनिर्भरता का प्रमुख साधन बन सकता है (सेन, 1999)। वैवाहिक स्थिति महिलाओं की पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी प्रभावित करती है। विवाहित महिलाओं को रोजगार के साथ-साथ बच्चों की देखभाल, भोजन व्यवस्था तथा अन्य घरेलू कार्यों का दायित्व भी निभाना पड़ता है। इस प्रकार घरेलू श्रमिक महिलाओं को प्रायः दोहरे कार्यभार का सामना करना पड़ता है (रघुराम, 2001)।

### 4.4 आय एवं आर्थिक स्थिति

घरेलू कार्यरत महिलाओं की आय उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। अधिकांश महिलाएँ सीमित आय अर्जित करती हैं और उनकी आय परिवार की कुल आय का महत्वपूर्ण हिस्सा हो सकती है। वेतन की राशि कार्य के प्रकार, कार्य करने वाले घरों की संख्या, कार्य के घंटों तथा स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार भिन्न होती है (कुमार, 2018)। महिलाओं द्वारा अर्जित आय का उपयोग प्रायः परिवार की दैनिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तथा घरेलू खर्चों के लिए किया जाता है। आर्थिक योगदान के कारण महिलाओं की आत्मनिर्भरता में वृद्धि हो सकती है। साथ ही, परिवार में उनकी उपयोगिता और निर्णय लेने की क्षमता में भी परिवर्तन देखा जा सकता है। हालांकि कम आय और अनिश्चित रोजगार उनकी आर्थिक सुरक्षा को सीमित करते हैं (सेन, 1999)।

### 4.5 पारिवारिक संरचना एवं जिम्मेदारियाँ

घरेलू श्रमिक महिलाओं की कार्य-भागीदारी उनकी पारिवारिक संरचना एवं जिम्मेदारियों से गहराई से जुड़ी होती है। संयुक्त एवं एकल दोनों प्रकार के परिवारों में रहने वाली महिलाएँ रोजगार करती हैं। परिवार का आकार, आश्रित सदस्यों की संख्या तथा बच्चों की शिक्षा जैसी परिस्थितियाँ महिलाओं के रोजगार संबंधी निर्णयों को प्रभावित करती हैं (शर्मा, 2015)। अनेक महिलाओं को रोजगार करने के बावजूद घरेलू कार्यों से पूर्णतः मुक्ति नहीं मिलती। कार्यस्थल पर श्रम करने के बाद भी उन्हें अपने घर की सफाई, भोजन व्यवस्था तथा बच्चों की देखभाल करनी पड़ती है। यह दोहरी जिम्मेदारी उनके शारीरिक एवं सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। इसलिए घरेलू श्रमिक महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल में पारिवारिक दायित्वों का अध्ययन आवश्यक है (भसीन, 2004)।

### 4.6 कार्य के घंटे एवं कार्यभार

घरेलू कार्यरत महिलाओं के कार्य के घंटे निश्चित नहीं होते। अनेक महिलाएँ प्रातः से लेकर दोपहर अथवा शाम तक विभिन्न घरों में कार्य करती हैं। कार्य के घंटों की अवधि उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों तथा घरों की संख्या पर निर्भर करती है। कई महिलाएँ एक से अधिक परिवारों के यहाँ कार्य करके अपनी आय बढ़ाने का प्रयास करती हैं (रघुराम, 2001)। घरेलू कार्य में शारीरिक श्रम की मात्रा अधिक होती है। सफाई, कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, भोजन बनाना तथा देखभाल संबंधी कार्य महिलाओं के दैनिक कार्यभार का हिस्सा होते हैं। कार्य के लंबे घंटे तथा अपने घरेलू दायित्वों के कारण महिलाओं पर दोहरे श्रम का दबाव उत्पन्न होता है (कबीर, 1999)।

### 4.7 रोजगार की प्रकृति एवं कार्य की स्थिति

अजमेर जिले में घरेलू श्रमिक महिलाओं का रोजगार मुख्यतः असंगठित प्रकृति का है। इस रोजगार में औपचारिक नियुक्ति प्रक्रिया, लिखित अनुबंध तथा नियमित सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं का सामान्यतः अभाव रहता है। रोजगार की निरंतरता प्रायः नियोक्ता की आवश्यकता एवं व्यक्तिगत संबंधों पर निर्भर करती है (कुमार, 2018)। घरेलू श्रमिक महिलाएँ पूर्णकालिक, अंशकालिक अथवा एक से अधिक घरों में कार्य करने वाली श्रमिकों के रूप में कार्य कर सकती हैं। कुछ महिलाएँ प्रतिदिन निश्चित समय के लिए कार्य करती हैं, जबकि कुछ विशेष कार्यों के लिए नियोजित होती हैं। इस प्रकार रोजगार की अनिश्चित प्रकृति महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा को प्रभावित करती है (शर्मा, 2015)।


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

**तालिका: 1** घरेलू कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल

| अध्ययन का आधार | प्रमुख विशेषताएँ |
|---|---|
| आयु | युवा, मध्यम एवं अधिक आयु वर्ग की महिलाएँ कार्यरत |
| शिक्षा | अधिकांश महिलाओं की शैक्षिक स्थिति सीमित |
| वैवाहिक स्थिति | विवाहित, अविवाहित, विधवा एवं परित्यक्ता महिलाएँ |
| आय | सीमित एवं अनियमित आय |
| पारिवारिक स्थिति | एकल एवं संयुक्त परिवारों की महिलाएँ |
| कार्य के घंटे | विभिन्न घरों में कार्य करने के कारण कार्य अवधि भिन्न |
| रोजगार की प्रकृति | मुख्यतः असंगठित एवं अनौपचारिक रोजगार |
| कार्यभार | रोजगार एवं घरेलू जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ |

तालिका 1 में अजमेर जिले में घरेलू कार्यरत महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक प्रोफ़ाइल का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें महिलाओं की आयु, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, आय, पारिवारिक संरचना, कार्य के घंटे तथा रोजगार की प्रकृति को प्रमुख आधार बनाया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सीमित शिक्षा, आर्थिक आवश्यकताओं तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण महिलाएँ मुख्यतः असंगठित क्षेत्र में कार्य करती हैं और उन्हें रोजगार के साथ घरेलू जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ भी उठाना पड़ता है।

## 5. महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन

### 5.1 आर्थिक स्वतंत्रता में परिवर्तन

असंगठित क्षेत्र में घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं के जीवन में आर्थिक स्वतंत्रता एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के रूप में सामने आती है। रोजगार से जुड़ने के बाद महिलाओं को अपनी आय अर्जित करने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे वे परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं में योगदान दे सकती हैं। घरेलू कार्य से प्राप्त आय भले ही सीमित हो, फिर भी यह महिलाओं के लिए आर्थिक सहयोग एवं आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण साधन बनती है (सेन, 1999)। आर्थिक रूप से सक्रिय होने के कारण महिलाएँ दैनिक घरेलू खर्च, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति में योगदान देती हैं। अपनी आय होने से महिलाओं में आर्थिक सुरक्षा की भावना विकसित हो सकती है तथा वे छोटी-बड़ी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर पूर्णतः निर्भर नहीं रहतीं। इस प्रकार रोजगार महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है (कबीर, 1999)।

### 5.2 आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि

कार्य करने के कारण महिलाओं में आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती है। जब महिला स्वयं आय अर्जित करती है, तो उसमें अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की क्षमता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि हो सकती है। घरेलू कार्य में संलग्न महिलाओं के लिए रोजगार केवल आय का स्रोत नहीं है, बल्कि यह स्वयं की क्षमता को पहचानने और सामाजिक रूप से सक्रिय होने का माध्यम भी बनता है (भसीन, 2004)। घरेलू वातावरण से बाहर निकलकर विभिन्न लोगों के संपर्क में आने से महिलाओं के अनुभवों का विस्तार होता है। वे सामाजिक परिस्थितियों को बेहतर ढंग से समझने लगती हैं तथा अपने अधिकारों एवं जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक हो सकती हैं। आर्थिक योगदान से प्राप्त आत्मविश्वास महिलाओं को व्यक्तिगत एवं पारिवारिक स्तर पर अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करता है (रघुराम, 2001)।

### 5.3 निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन

महिलाओं की आय अर्जित करने की क्षमता का प्रभाव परिवार में उनकी निर्णय लेने की भूमिका पर भी पड़ सकता है। आर्थिक रूप से योगदान देने वाली महिलाएँ घरेलू खर्च, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य आवश्यक विषयों पर अपनी राय प्रस्तुत करने में अधिक सक्षम महसूस करती हैं। रोजगार से महिलाओं की पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी बढ़ने की संभावना उत्पन्न होती है (सेन, 1999)। हालाँकि निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन सभी परिवारों में समान रूप से नहीं होता। पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था तथा पुरुष प्रधान सामाजिक संरचना के कारण कुछ महिलाओं की निर्णय लेने की स्वतंत्रता सीमित बनी रहती है। फिर भी आर्थिक योगदान महिलाओं को परिवार में अपनी भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने का अवसर प्रदान करता है (कबीर, 1999)।

### 5.4 पारिवारिक सम्मान एवं स्थिति में परिवर्तन

महिलाओं द्वारा परिवार की आय में योगदान देने से परिवार में उनके सम्मान एवं महत्व में परिवर्तन देखा जा सकता है। जब महिला आर्थिक रूप से परिवार का सहयोग करती है, तो उसे परिवार के एक महत्वपूर्ण सदस्य के रूप में अधिक मान्यता प्राप्त हो सकती है। विशेष रूप से निम्न आय वर्ग के परिवारों में महिलाओं की आय घरेलू बजट को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (शर्मा, 2015)। कार्यरत महिलाओं के प्रति परिवार के दृष्टिकोण में भी धीरे-धीरे परिवर्तन दिखाई देता है। पहले जहाँ महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित मानी जाती थी, वहीं अब उनकी आर्थिक भूमिका को भी महत्व दिया जाने लगा है। हालांकि कई परिस्थितियों में महिलाओं को आय अर्जित करने के बावजूद घरेलू कार्यों की संपूर्ण जिम्मेदारी निभानी पड़ती है, जिससे उनके दोहरे कार्यभार की स्थिति बनी रहती है (भसीन, 2004)।

### 5.5 सामाजिक पहचान में परिवर्तन

रोजगार महिलाओं की सामाजिक पहचान को भी प्रभावित करता है। घरेलू कार्य में संलग्न महिलाएँ घर से बाहर निकलकर विभिन्न सामाजिक समूहों एवं व्यक्तियों के संपर्क में आती हैं। इससे उनके सामाजिक अनुभवों तथा संपर्कों का विस्तार होता है। कार्यरत महिला की पहचान केवल परिवार के सदस्य के रूप में न रहकर एक आर्थिक योगदानकर्ता के रूप में भी विकसित होती है (रघुराम, 2001)। फिर भी घरेलू श्रम को समाज में कई बार कम प्रतिष्ठित कार्य माना जाता है। इस कारण घरेलू श्रमिक महिलाओं को सामाजिक भेदभाव तथा सम्मान की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अतः रोजगार से सामाजिक पहचान में परिवर्तन होने के बावजूद सामाजिक स्वीकृति और सम्मान की प्रक्रिया अभी भी अनेक चुनौतियों से जुड़ी हुई है (कुमार, 2018)।

### 5.6 सामाजिक सहभागिता एवं जागरूकता में वृद्धि

कार्य करने से महिलाओं की सामाजिक सहभागिता में वृद्धि होती है। विभिन्न घरों एवं लोगों के संपर्क में आने से उनके अनुभवों का विस्तार होता है। वे समाज में उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं, योजनाओं तथा अवसरों के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इस प्रकार रोजगार महिलाओं में सामाजिक जागरूकता विकसित करने में भी सहायक हो सकता है (शर्मा, 2015)। महिलाओं का घर से बाहर निकलना उनकी पारंपरिक सामाजिक सीमाओं को कुछ हद तक विस्तृत करता है। वे अन्य महिलाओं के साथ संपर्क स्थापित करती हैं तथा अपने अनुभवों और समस्याओं को साझा करती हैं। इससे उनमें सामूहिकता, जागरूकता तथा अपने अधिकारों के प्रति समझ विकसित होने की संभावना बढ़ती है (कबीर, 1999)।

### 5.7 सामाजिक स्थिति में परिवर्तन की सीमाएँ

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के बावजूद अनेक संरचनात्मक एवं सामाजिक चुनौतियाँ बनी रहती हैं। आर्थिक रूप से सक्रिय होने के बाद भी कई महिलाएँ पुरुषों पर आर्थिक एवं सामाजिक रूप से आंशिक रूप से निर्भर रहती हैं। परिवार एवं समाज की पारंपरिक मान्यताएँ उनकी स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं (सेन, 1999)। घरेलू श्रमिक महिलाओं के संदर्भ में कम वेतन, रोजगार की अनिश्चितता, सामाजिक सुरक्षा का अभाव तथा कार्यस्थल संबंधी समस्याएँ उनके सामाजिक विकास को सीमित कर सकती हैं। इसलिए केवल रोजगार को महिला सशक्तिकरण का पूर्ण आधार नहीं माना जा सकता। वास्तविक सामाजिक परिवर्तन के लिए आर्थिक अवसरों के साथ शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सम्मान तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी आवश्यक है (भसीन, 2004)।

**तालिका:2** घरेलू कार्य करने से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन

| परिवर्तन का क्षेत्र | प्रमुख परिवर्तन |
|---|---|
| आर्थिक स्वतंत्रता | स्वयं आय अर्जित करने का अवसर |
| आत्मनिर्भरता | आर्थिक निर्भरता में कमी की संभावना |
| आत्मविश्वास | व्यक्तिगत एवं सामाजिक आत्मविश्वास में वृद्धि |
| निर्णय लेने की क्षमता | पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी में वृद्धि |
| पारिवारिक सम्मान | आर्थिक योगदान के कारण महत्व में वृद्धि |
| सामाजिक पहचान | आर्थिक योगदानकर्ता के रूप में पहचान |
| सामाजिक सहभागिता | सामाजिक संपर्क एवं जागरूकता में विस्तार |
| सशक्तिकरण | आत्मसम्मान एवं सक्रिय भूमिका की संभावना |

तालिका 2 में घरेलू कार्य करने से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में होने वाले प्रमुख परिवर्तनों को दर्शाया गया है। रोजगार से महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास में वृद्धि की संभावना उत्पन्न होती है। साथ ही पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी, सम्मान तथा सामाजिक पहचान में भी सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है। घर से बाहर कार्य करने के कारण महिलाओं की सामाजिक सहभागिता एवं जागरूकता का विस्तार होता है, जिससे महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है।

## 6. घरेलू कार्यरत महिलाओं के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

### 6.1 कम वेतन एवं आर्थिक असमानता

असंगठित क्षेत्र में घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं के समक्ष कम वेतन एक प्रमुख आर्थिक चुनौती है। घरेलू श्रम में संलग्न अधिकांश महिलाओं को उनके कार्य की मात्रा, समय तथा जिम्मेदारियों के अनुरूप पर्याप्त पारिश्रमिक प्राप्त नहीं होता। अनेक महिलाएँ एक से अधिक घरों में कार्य करने के बावजूद सीमित आय अर्जित कर पाती हैं। घरेलू कार्य को पारंपरिक रूप से महिलाओं का सामान्य कार्य माना जाने के कारण इसके आर्थिक मूल्यांकन को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता है (भसीन, 2004)। कम आय के कारण महिलाओं को परिवार की दैनिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य खर्चों को पूरा करने में कठिनाई होती है। कई महिलाओं को बढ़ती महँगाई के बावजूद वेतन में अपेक्षित वृद्धि नहीं मिलती। नियोक्ता और घरेलू श्रमिक के बीच औपचारिक वेतन संरचना के अभाव के कारण पारिश्रमिक प्रायः व्यक्तिगत समझौते पर आधारित होता है, जिससे आर्थिक असमानता की स्थिति उत्पन्न होती है (सेन, 1999)।

### 6.2 रोजगार की असुरक्षा एवं अनिश्चितता

घरेलू श्रमिक महिलाओं का रोजगार सामान्यतः अनौपचारिक एवं अस्थायी प्रकृति का होता है। अधिकांश महिलाओं के पास लिखित नियुक्ति पत्र, निश्चित सेवा शर्तें अथवा रोजगार की कानूनी सुरक्षा उपलब्ध नहीं होती। नियोक्ता की आवश्यकता समाप्त होने, परिवार के स्थान परिवर्तन अथवा अन्य व्यक्तिगत कारणों से महिलाओं का रोजगार किसी भी समय समाप्त हो सकता है (कुमार, 2018)। रोजगार की इस अनिश्चितता का महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। यदि किसी महिला का एक या अधिक घरों में कार्य समाप्त हो जाता है, तो उसकी मासिक आय में कमी आ सकती है। नई जगह रोजगार प्राप्त करने में समय लगने के कारण परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कठिन हो सकती है। इस प्रकार रोजगार की अस्थिरता घरेलू श्रमिक महिलाओं में आर्थिक असुरक्षा की भावना को बढ़ाती है (रघुराम, 2001)।

### 6.3 सामाजिक भेदभाव एवं सम्मान की समस्या

घरेलू कार्यरत महिलाओं को कई बार सामाजिक भेदभाव तथा सम्मान की कमी का सामना करना पड़ता है। घरेलू श्रम को समाज में


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अपेक्षाकृत कम प्रतिष्ठित कार्य के रूप में देखा जाता है, जिसके कारण इस कार्य में संलग्न महिलाओं की सामाजिक पहचान प्रभावित हो सकती है। आर्थिक रूप से योगदान देने के बावजूद उन्हें समाज में समान सम्मान प्राप्त नहीं होता (कबीर, 1999)। कुछ परिस्थितियों में महिलाओं के साथ उनके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के आधार पर भिन्न व्यवहार किया जा सकता है। घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं को नियोक्ता के परिवार से अलग सामाजिक दूरी बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। यह स्थिति महिलाओं के आत्मसम्मान तथा सामाजिक आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकती है। सामाजिक सम्मान की कमी महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण बाधा के रूप में सामने आती है (भसीन, 2004)।

### 6.4 कार्यस्थल संबंधी समस्याएँ

घरेलू श्रमिक महिलाओं का कार्यस्थल सामान्य कार्यालय या औद्योगिक क्षेत्र की तरह औपचारिक रूप से नियंत्रित नहीं होता। उनका कार्यस्थल किसी व्यक्ति या परिवार का निजी घर होता है, जहाँ कार्य की प्रकृति, समय और जिम्मेदारियाँ अलग-अलग हो सकती हैं। इस कारण कार्य की स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित नहीं होतीं और कई बार महिलाओं से निर्धारित कार्य से अधिक कार्य करने की अपेक्षा की जाती है (कुमार, 2018)। कार्यस्थल पर महिलाओं को लंबे कार्य घंटे, अत्यधिक शारीरिक श्रम, आराम की कमी तथा अतिरिक्त कार्यभार जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कई मामलों में कार्य के समय और जिम्मेदारियों के संबंध में स्पष्ट व्यवस्था नहीं होती। घरेलू श्रमिक महिलाओं के लिए शिकायत निवारण की प्रभावी व्यवस्था का अभाव भी उनकी कार्यस्थल संबंधी समस्याओं को अधिक जटिल बनाता है (सेन, 1999)।

### 6.5 कार्य एवं घरेलू जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ

घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक कार्य और पारिवारिक जिम्मेदारियों का दोहरा बोझ है। महिलाएँ अन्य परिवारों के घरों में कार्य करने के बाद अपने घर के भोजन, सफाई, बच्चों की देखभाल तथा अन्य पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करती हैं। इस प्रकार उनका कार्यभार केवल रोजगार तक सीमित नहीं रहता (कबीर, 1999)। दोहरी जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं को पर्याप्त आराम और व्यक्तिगत समय प्राप्त नहीं हो पाता। लंबे समय तक शारीरिक श्रम करने से थकान तथा कार्य क्षमता पर प्रभाव पड़ सकता है। इसके बावजूद पारिवारिक एवं सामाजिक अपेक्षाएँ महिलाओं से घरेलू दायित्वों को प्राथमिकता देने की अपेक्षा करती हैं। यह स्थिति उनके सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास के अवसरों को सीमित कर सकती है (रघुराम, 2001)।

### 6.6 सामाजिक सुरक्षा का अभाव

असंगठित क्षेत्र में कार्यरत घरेलू श्रमिक महिलाओं के समक्ष सामाजिक सुरक्षा का अभाव एक गंभीर चुनौती है। अधिकांश महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य सुविधाएँ, पेंशन, भविष्य निधि, मातृत्व लाभ, सवेतन अवकाश अथवा रोजगार समाप्त होने की स्थिति में आर्थिक सहायता जैसी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होतीं। इससे उनका जीवन आर्थिक एवं सामाजिक जोखिमों से प्रभावित होता है (सेन, 1999)। बीमारी, दुर्घटना अथवा पारिवारिक संकट की स्थिति में घरेलू श्रमिक महिलाओं की आय प्रभावित हो सकती है। कार्य न कर पाने की स्थिति में उनके पास नियमित आय का कोई वैकल्पिक स्रोत नहीं होता। विशेष रूप से निम्न आय वर्ग की महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा का अभाव आर्थिक संकट को अधिक गंभीर बना सकता है (कुमार, 2018)।

### 6.7 कानूनी जागरूकता एवं अधिकारों की कमी

अनेक घरेलू श्रमिक महिलाओं को अपने श्रम अधिकारों, सरकारी योजनाओं तथा सामाजिक सुरक्षा संबंधी सुविधाओं की पर्याप्त जानकारी नहीं होती। सीमित शिक्षा तथा सूचना तक सीमित पहुँच के कारण वे उपलब्ध सुविधाओं का पूरा लाभ नहीं उठा पातीं। अधिकारों के प्रति जागरूकता की कमी उनके शोषण की संभावनाओं को बढ़ा सकती है (भसीन, 2004)। महिलाओं को कई बार वेतन, कार्य समय तथा अन्य सुविधाओं के संबंध में अपनी मांग स्पष्ट रूप से रखने में कठिनाई होती है। रोजगार खोने का भय भी उन्हें अपनी समस्याओं के संबंध में आवाज उठाने से रोक सकता है। इसलिए घरेलू श्रमिक महिलाओं में कानूनी एवं सामाजिक जागरूकता का विकास अत्यंत आवश्यक है (रघुराम, 2001)।

### 6.8 स्वास्थ्य एवं कार्य संबंधी जोखिम

घरेलू कार्य की प्रकृति मुख्यतः शारीरिक श्रम पर आधारित होती है। सफाई, कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, पानी से संबंधित कार्य तथा लंबे समय तक खड़े रहना महिलाओं के दैनिक कार्य का हिस्सा हो सकता है। निरंतर शारीरिक श्रम के कारण महिलाओं को थकान तथा कार्य क्षमता से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है (कबीर, 1999)। कार्य की अनिश्चित प्रकृति के कारण कई महिलाओं को पर्याप्त आराम अथवा स्वास्थ्य संबंधी देखभाल के लिए समय नहीं मिल पाता। बीमारी की स्थिति में कार्य से अनुपस्थित रहने पर आय में कमी होने की संभावना रहती है। इस कारण महिलाएँ कई बार अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और स्वास्थ्य को प्राथमिकता नहीं दे पातीं, जिससे उनकी कार्य एवं जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है (शर्मा, 2015)।

## 7. निष्कर्ष एवं सुझाव

### 7.1 निष्कर्ष

अजमेर जिले में असंगठित क्षेत्र के अंतर्गत घरेलू कार्य में संलग्न महिलाओं की स्थिति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि उनका रोजगार केवल आय अर्जित करने का माध्यम नहीं है, बल्कि उनके सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक भी है। घरेलू कार्य में संलग्न अधिकांश महिलाएँ आर्थिक रूप से कमजोर एवं निम्न आय वर्ग की पृष्ठभूमि से संबंधित होती हैं। सीमित शिक्षा, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ तथा औपचारिक रोजगार के अवसरों की कमी उन्हें असंगठित क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है (कबीर, 1999)। महिलाओं द्वारा अर्जित आय परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। घरेलू कार्य से प्राप्त आय का उपयोग दैनिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा अन्य पारिवारिक खर्चों के लिए किया जाता है। अपनी आय होने के कारण महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती है और वे परिवार के आर्थिक निर्णयों में अपनी भूमिका को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकती हैं (सेन, 1999)।


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि कार्य करने के कारण महिलाओं के आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है। घर से बाहर कार्य करने के कारण उनके सामाजिक संपर्कों का विस्तार होता है तथा वे विभिन्न प्रकार के सामाजिक अनुभव प्राप्त करती हैं। आर्थिक योगदान के कारण परिवार में उनकी उपयोगिता एवं महत्व की भावना बढ़ सकती है। इससे निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी में भी सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है (भसीन, 2004)। इसके बावजूद घरेलू कार्यरत महिलाओं के समक्ष अनेक गंभीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं। कम वेतन, रोजगार की अनिश्चितता, लिखित अनुबंध का अभाव, लंबे कार्य घंटे तथा सामाजिक सुरक्षा की कमी उनकी प्रमुख समस्याएँ हैं। घरेलू कार्य को औपचारिक रोजगार के समान मान्यता नहीं मिलने के कारण महिलाओं को पर्याप्त श्रम सुरक्षा एवं सुविधाएँ प्राप्त नहीं हो पातीं (रघुराम, 2001)। सामाजिक स्तर पर भी घरेलू श्रमिक महिलाओं को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक योगदान देने के बावजूद उन्हें कई बार सामाजिक भेदभाव एवं सम्मान की कमी का अनुभव होता है। कार्यस्थल एक निजी घर होने के कारण कार्य के समय, जिम्मेदारियों तथा व्यवहार संबंधी स्पष्ट नियमों का अभाव रहता है। इसके अतिरिक्त रोजगार के साथ-साथ अपने घर की जिम्मेदारियाँ निभाने के कारण महिलाओं को दोहरे कार्यभार का सामना करना पड़ता है (कुमार, 2018)।

## 7.2 सुझाव

### 7.2.1 उचित एवं नियमित पारिश्रमिक की व्यवस्था

घरेलू श्रमिक महिलाओं को उनके कार्य की प्रकृति, समय एवं जिम्मेदारियों के अनुरूप उचित पारिश्रमिक प्रदान किया जाना चाहिए। वेतन की स्पष्ट एवं नियमित व्यवस्था से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया जा सकता है। स्थानीय स्तर पर घरेलू कार्यों के लिए न्यूनतम पारिश्रमिक संबंधी व्यवस्था विकसित करने की आवश्यकता है (सेन, 1999)।

**तालिका:3** घरेलू कार्यरत महिलाओं के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ एवं आवश्यक उपाय

| प्रमुख चुनौती | महिलाओं पर प्रभाव | आवश्यक उपाय |
|---|---|---|
| कम वेतन | आर्थिक कठिनाई | उचित एवं नियमित पारिश्रमिक |
| रोजगार की असुरक्षा | आय में अनिश्चितता | रोजगार संबंधी स्पष्ट नियम |
| सामाजिक भेदभाव | आत्मसम्मान प्रभावित | सामाजिक जागरूकता |
| कार्यस्थल संबंधी समस्याएँ | अतिरिक्त कार्यभार | सुरक्षित एवं सम्मानजनक वातावरण |
| दोहरा कार्यभार | शारीरिक एवं मानसिक दबाव | पारिवारिक सहयोग |
| सामाजिक सुरक्षा का अभाव | आर्थिक जोखिम | बीमा एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ |
| कानूनी जागरूकता की कमी | अधिकारों का सीमित उपयोग | जागरूकता कार्यक्रम |
| स्वास्थ्य संबंधी जोखिम | कार्य क्षमता प्रभावित | स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सुविधाएँ |

तालिका 3 में घरेलू कार्यरत महिलाओं के समक्ष प्रमुख चुनौतियों तथा उनके समाधान हेतु आवश्यक उपायों को प्रस्तुत किया गया है। कम वेतन, रोजगार की असुरक्षा, सामाजिक भेदभाव, कार्यस्थल संबंधी समस्याएँ, दोहरा कार्यभार, सामाजिक सुरक्षा का अभाव तथा कानूनी जागरूकता की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए उचित पारिश्रमिक, सुरक्षित रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, जागरूकता कार्यक्रम तथा सम्मानजनक कार्य वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है।

### 7.2.2 रोजगार की सुरक्षा सुनिश्चित करना

घरेलू श्रमिक महिलाओं के रोजगार को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए कार्य संबंधी स्पष्ट नियम एवं शर्तें निर्धारित की जानी चाहिए। जहाँ संभव हो, कार्य की प्रकृति, समय, वेतन तथा जिम्मेदारियों से संबंधित सरल लिखित समझौते की व्यवस्था की जा सकती है। इससे रोजगार संबंधी अनिश्चितता एवं विवादों को कम करने में सहायता मिलेगी (कुमार, 2018)।

### 7.2.3 सामाजिक सुरक्षा सुविधाओं का विस्तार

घरेलू कार्यरत महिलाओं को स्वास्थ्य, बीमा, पेंशन तथा अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। सरकारी एवं स्थानीय संस्थाओं द्वारा इन योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में उपलब्ध कराई जानी चाहिए। सामाजिक सुरक्षा से महिलाओं की आर्थिक असुरक्षा को कम करने में सहायता मिल सकती है (भसीन, 2004)।

### 7.2.4 शिक्षा एवं कौशल विकास को प्रोत्साहन

महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में स्थायी सुधार के लिए शिक्षा और कौशल विकास आवश्यक है। घरेलू श्रमिक महिलाओं तथा उनके परिवारों के लिए साक्षरता, डिजिटल जागरूकता एवं विभिन्न व्यावसायिक कौशलों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इससे महिलाओं को भविष्य में बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं (शर्मा, 2015)।

### 7.2.5 अधिकारों एवं योजनाओं के प्रति जागरूकता

महिलाओं को उनके श्रम अधिकारों, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं तथा सरकारी सुविधाओं के संबंध में जागरूक किया जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर जागरूकता शिविर, महिला समूह तथा सामाजिक संगठनों के माध्यम से आवश्यक जानकारी प्रदान की जा सकती है। अधिकारों के प्रति जागरूकता महिलाओं को अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम बना सकती है (रघुराम, 2001)।

### 7.2.6 सम्मानजनक एवं सुरक्षित कार्य वातावरण

घरेलू श्रमिक महिलाओं के लिए सुरक्षित एवं सम्मानजनक कार्य वातावरण सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। नियोक्ताओं एवं समाज में घरेलू श्रम के महत्व के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जानी


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

चाहिए। महिलाओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार तथा कार्य की स्पष्ट सीमाओं को निर्धारित करना उनके सामाजिक सम्मान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है (कबीर, 1999)।

### 7.2.7 महिला समूहों एवं सामूहिक संगठनों को बढ़ावा

घरेलू कार्यरत महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों, महिला संगठनों एवं सामुदायिक समूहों से जोड़ने के प्रयास किए जाने चाहिए। सामूहिक संगठन के माध्यम से महिलाएँ अपने अनुभव साझा कर सकती हैं तथा रोजगार, बचत और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इससे उनकी सामूहिक जागरूकता एवं सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा मिल सकता है (सेन, 1999)।

### 7.2.8 परिवार एवं समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में वास्तविक परिवर्तन के लिए परिवार एवं समाज की सोच में परिवर्तन आवश्यक है। कार्यरत महिलाओं के आर्थिक योगदान को सम्मानपूर्वक स्वीकार किया जाना चाहिए तथा घरेलू जिम्मेदारियों को केवल महिलाओं का दायित्व न मानते हुए परिवार के अन्य सदस्यों की भी सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए। इससे महिलाओं के दोहरे कार्यभार को कम करने में सहायता मिल सकती है (भसीन, 2004)।

## संदर्भ सूची


1. अग्रवाल आर. अनौपचारिक श्रम, औपचारिक राजनीति और भारत में श्रमिक असंतोष की गरिमा. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 2013.
2. बेनेरिया एल. लिंग, विकास और वैश्वीकरण: मानव-केंद्रित अर्थशास्त्र. रूटलेज; 2003.
3. भसीन क. लिंग, समाज और महिला सशक्तिकरण के प्रश्न. वीमेन अनलिमिटेड; 2004.
4. भारत सरकार. असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय; 2008.
5. भारत सरकार. सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020. श्रम एवं रोजगार मंत्रालय; 2020.
6. भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त. जिला जनगणना पुस्तिका: अजमेर, राजस्थान. भारत सरकार; 2014.
7. भारत का राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय. आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण: वार्षिक रिपोर्ट 2019–20. सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार; 2021.
8. चेन एमए. अनौपचारिक अर्थव्यवस्था: परिभाषाएँ, सिद्धांत और नीतियाँ. वीगो कार्यपत्र श्रृंखला; 2012.
9. देसाई एस, जैन डी. मातृ रोजगार और पारिवारिक संरचना में परिवर्तन. जनसंख्या एवं विकास समीक्षा. 1994;20(1):115–136.
10. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन. घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य संबंधी कन्वेंशन संख्या 189. आईएलओ; 2011.
11. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन. घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य संबंधी अनुशंसा संख्या 201. आईएलओ; 2011.
12. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन. भविष्य के सम्मानजनक कार्य के लिए देखभाल कार्य और देखभाल रोजगार. आईएलओ; 2018.
13. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन. घरेलू श्रमिकों के लिए सम्मानजनक कार्य को वास्तविकता बनाना: कन्वेंशन संख्या 189 के दस वर्ष. आईएलओ; 2021.
14. कबीर एन. संसाधन, स्वायत्तता और उपलब्धियाँ: महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार. डेवलपमेंट एंड चेंज. 1999;30(3):435–464.
15. कबीर एन. चुनने की शक्ति: महिलाओं के श्रम-बाज़ार संबंधी निर्णयों का अध्ययन. वर्सो; 2000.
16. कबीर एन. लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण: सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का आलोचनात्मक विश्लेषण. जेंडर एंड डेवलपमेंट. 2005;13(1):13–24.
17. कलपगम यू. महिलाएँ, असंगठित क्षेत्र और संघर्ष के दृष्टिकोण. सोशल साइंटिस्ट. 1987;15(6):33–44.
18. कांतोर पी. घर-आधारित कार्य के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: भारत से प्रमाण. डेवलपमेंट एंड चेंज. 2003;34(3):425–445.
19. कन्नन केपी, रवीन्द्रन जी. रोजगार-विहीन विकास: भारत के संगठित विनिर्माण क्षेत्र में एक चौथाई सदी. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली. 2009;44(10):80–91.
20. महेंद्रू एस, सवारा एस. भारत में महिला घरेलू श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा: नई श्रम संहिता के अंतर्गत एक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ, मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटीज. 2025;8(3):3584–3601.
21. मेहरोत्रा एस, परिदा जेके. भारत में महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी क्यों घट रही है? वर्ल्ड डेवलपमेंट. 2017;98:360–380.
22. मित्रा ए. शहरी अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाएँ: कम आय की निरंतरता. डेवलपमेंट एंड चेंज. 2005;36(5):969–990.
23. राष्ट्रीय असंगठित क्षेत्र उद्यम आयोग. असंगठित क्षेत्र में कार्य की परिस्थितियों और आजीविका संवर्धन पर रिपोर्ट. भारत सरकार; 2007.
24. राष्ट्रीय असंगठित क्षेत्र उद्यम आयोग. भारत में रोजगार की चुनौती: अनौपचारिक अर्थव्यवस्था का एक परिप्रेक्ष्य. भारत सरकार; 2009.
25. नीथा एन. घरेलू सेवा की रूपरेखा: विशेषताएँ, कार्य संबंध और विनियमन. इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स. 2009;52(3):489–506.



© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

26. सेन अमर्त्य. स्वतंत्रता के रूप में विकास. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1999.
27. सेन जी, ग्रोन सी. विकास, संकट और वैकल्पिक दृष्टिकोण: तृतीय विश्व की महिलाओं के परिप्रेक्ष्य. मंथली रिव्यू प्रेस; 1987.
28. शर्मा एएन. भारत के असंगठित क्षेत्र में महिला श्रमिक: मुद्दे और चुनौतियाँ. अकादमिक प्रेस; 2015.
29. जाधव एन. बिना सुरक्षा के कार्य: महिला घरेलू श्रमिकों की कार्य-स्थितियों, संघर्षों और आकांक्षाओं का विश्लेषण. इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन एंड प्रैक्टिस. 2025:167–176.
30. भारत की जनगणना. भारत की जनगणना 2011. भारत के महारजिस्ट्रार एवं जनगणना आयुक्त का कार्यालय, भारत सरकार; 2011.
31. रघुराम पी. भारत में सवेतन घरेलू कार्य के संगठन में जाति और लैंगिकता. वर्क, एम्प्लॉयमेंट एंड सोसाइटी. 2001;15(3):607–617.



**Creative Commons (CC) License**

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.


**About the Author**

**विजय प्रकाश मीणा** समाजशास्त्र के शोधार्थी एवं अकादमिक लेखक हैं। वे मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान के सामाजिक विज्ञान संकाय के यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज के समाजशास्त्र विभाग से संबद्ध हैं। उनका शैक्षणिक एवं शोध कार्य सामाजिक संरचना, श्रम, सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक मुद्दे, समुदाय और समकालीन सामाजिक मुद्दों के अध्ययन पर केंद्रित है।

**डॉ. हेमलता महावर** समाजशास्त्र की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। वे महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान के समाजशास्त्र विभाग में कार्यरत हैं और मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से संबद्ध हैं। उनका अकादमिक एवं शोध कार्य समाजशास्त्र, सामाजिक परिवर्तन, लैंगिक मुद्दों, श्रम तथा समकालीन सामाजिक समस्याओं से संबंधित विषयों पर केंद्रित है।


© 2026 Vijay Prakash Meena, Dr. Hemlata Mahawar. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/